National Journal of Advanced Research
www.nationaljournals.com
ISSN: 2455-216X
Received: 02-03-2026, Accepted: 02-04-2026, Published: 17-04-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 6-9

भारत के विकास में धार्मिक पर्यटन का योगदान

पूनम देवी, अमित चमोली
Research Scholar, Jayoti Vidyapeeth Women's UniversitY (JVWU), Jaipur, Rajasthan, India

सारांश
धार्मिक पर्यटन आज के समय में एक महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि बन गया है, जो न केवल सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करता है, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी बढ़ावा देता है। यह शोधपत्र भारत में धार्मिक पर्यटन के योगदान का अध्ययन करता है, जिसमें प्रमुख धार्मिक स्थलों का आर्थिक प्रभाव, रोजगार सृजन, और स्थानीय समुदायों पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। शोध के परिणामस्वरूप, धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।
कुछ प्रमुख बिंदु:
1. धार्मिक पर्यटन की परिभाषा और महत्व
2. भारत में प्रमुख धार्मिक पर्यटन स्थल (वृंदावन, वाराणसी, शिर्डी)
3. धार्मिक पर्यटन का आर्थिक योगदान
- रोजगार सृजन
- स्थानीय व्यवसायों को बढ़ावा

4. चुनौतियाँ (संक्रमण, संरक्षण, प्रबंधन)
भारत एक बहुधार्मिक एवं सांस्कृतिक विविधताओं से परिपूर्ण देश है, जहाँ धार्मिक पर्यटन का विशेष महत्व है। धार्मिक पर्यटन न केवल आस्था और विश्वास से जुड़ा हुआ है, बल्कि यह देश के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत में चारधाम, द्वादश ज्योतिर्लिंग, शक्तिपीठ, बौद्ध तीर्थ, सिख गुरुद्वारे, सूफी दरगाहें तथा ईसाई तीर्थस्थल जैसे अनेक धार्मिक स्थल स्थित हैं, जो प्रतिवर्ष लाखों देशी–विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।
धार्मिक पर्यटन का सबसे बड़ा योगदान आर्थिक विकास के रूप में देखा जा सकता है। तीर्थयात्रियों की बढ़ती संख्या से होटल, धर्मशाला, परिवहन, भोजनालय, स्थानीय हस्तशिल्प, फूल–प्रसाद और अन्य लघु उद्योगों को बढ़ावा मिलता है। इससे प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार के अवसर सृजित होते हैं, विशेषकर ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में। धार्मिक पर्यटन के कारण सड़क, रेल, हवाई संपर्क, स्वच्छता, जल आपूर्ति तथा स्वास्थ्य सुविधाओं जैसे बुनियादी ढाँचे का भी विकास होता है।सामाजिक दृष्टि से धार्मिक पर्यटन राष्ट्रीय एकता, आपसी भाईचारे और सांस्कृतिक आदान–प्रदान को सुदृढ़ करता है। विभिन्न धर्मों, भाषाओं और क्षेत्रों के लोग एक–दूसरे के संपर्क में आते हैं, जिससे "विविधता में एकता" की भावना को बल मिलता है। साथ ही, धार्मिक स्थलों के संरक्षण एवं संवर्धन से भारत की प्राचीन सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत सुरक्षित रहती है। सरकार द्वारा "प्रसाद योजना" और "स्वदेश दर्शन योजना" जैसी पहलें धार्मिक पर्यटन को संगठित रूप से विकसित करने में सहायक सिद्ध हो रही

मूल शब्दः धार्मिक पर्यटन, भारत का विकास, तीर्थस्थल, आर्थिक विकास, सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक विरासत

पर्यटन भारतीय अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है, और धार्मिक पर्यटन इसका सबसे प्राचीन एवं लोकप्रिय स्वरूप है। हर वर्ष करोड़ों श्रद्धालु चारधाम यात्रा, काशी, अयोध्या, वैष्णो देवी, अजमेर शरीफ, बोधगया, अमृतसर, वेलंकन्नी आदि तीर्थ स्थलों पर आते हैं। इससे स्थानीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर विकास को गति मिलती है।:
पर्यटन भारतीय अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण और सुदृढ़ स्तंभ माना जाता है, जो देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत में पर्यटन के विभिन्न स्वरूप प्रचलित हैं, जिनमें धार्मिक पर्यटन सबसे प्राचीन, व्यापक एवं लोकप्रिय स्वरूप के रूप में उभरकर सामने आता है। भारत अपनी समृद्ध धार्मिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत के कारण विश्व–भर में प्रसिद्ध है। प्रत्येक वर्ष देश–विदेश से करोड़ों श्रद्धालु और पर्यटक चारधाम यात्रा, काशी, अयोध्या, वैष्णो देवी, अजमेर शरीफ, बोधगया, अमृतसर तथा वेलंकन्नी जैसे प्रमुख तीर्थ स्थलों की यात्रा करते हैं।
इन तीर्थ स्थलों पर आने वाले श्रद्धालुओं की बड़ी संख्या के कारण स्थानीय अर्थव्यवस्था को प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त होता है। होटल, धर्मशाला, परिवहन, भोजनालय, हस्तशिल्प एवं स्थानीय व्यवसायों को प्रोत्साहन मिलता है, जिससे रोजगार के नए अवसर सृजित होते हैं। साथ ही, सरकार को कर एवं राजस्व के रूप में आय प्राप्त होती है, जिसका उपयोग अवसंरचनात्मक विकास जैसे सड़क, स्वास्थ्य, स्वच्छता और संचार सुविधाओं के विस्तार में किया जाता है। इस प्रकार धार्मिक पर्यटन न केवल स्थानीय विकास को गति प्रदान करता है, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

अध्ययन के उद्देश्य
1. धार्मिक पर्यटन की अवधारणा को समझना
2. भारत में धार्मिक पर्यटन के प्रमुख केंद्रों का अध्ययन
3. आर्थिक विकास में धार्मिक पर्यटन की भूमिका का विश्लेषण
4. सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभावों का मूल्यांकन

अनुसंधान पद्धति
यह शोध–पत्र द्वितीयक स्रोतों (पुस्तकें, शोध–पत्र, सरकारी रिपोर्ट, पत्र–पत्रिकाएँ) पर आधारित है। वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है।

भारत में धार्मिक पर्यटन के प्रमुख केंद्र
1. **हिंदू धर्म:** हिंदू धर्म विश्व के प्राचीनतम धर्मों में से एक है और भारत में इसकी धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराएँ अत्यंत समृद्ध रही हैं। हिंदू धर्म से जुड़े तीर्थ स्थल न केवल आस्था के केंद्र हैं, बल्कि वे भारत की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और

आध्यात्मिक विरासत का भी प्रतीक हैं। काशी (वाराणसी) को हिंदू धर्म की आध्यात्मिक राजधानी माना जाता है, जहाँ गंगा नदी के तट पर स्थित घाट और विश्वनाथ मंदिर श्रद्धालुओं के लिए विशेष महत्व रखते हैं। यह विश्वास किया जाता है कि काशी में मृत्यु मोक्ष का द्वार खोलती है।

अयोध्या भगवान श्रीराम की जन्मभूमि के रूप में जानी जाती है और रामायण काल से इसका विशेष धार्मिक महत्व रहा है। मथुरा भगवान श्रीकृष्ण की जन्मस्थली है, जहाँ जन्माष्टमी जैसे पर्व भव्य रूप से मनाए जाते हैं। हरिद्वार गंगा नदी के तट पर स्थित एक प्रमुख तीर्थ स्थल है, जहाँ कुंभ मेले का आयोजन होता है और देश–विदेश से करोड़ों श्रद्धालु एकत्रित होते हैं। तिरुपति में स्थित भगवान वेंकटेश्वर (बालाजी) का मंदिर भारत ही नहीं, बल्कि विश्व के सबसे अधिक दर्शन किए जाने वाले मंदिरों में से एक है।
ये सभी तीर्थ स्थल धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने के साथ–साथ स्थानीय एवं राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था, सांस्कृतिक संरक्षण तथा सामाजिक एकता को भी सुदृढ़ करते हैं।

2. **बौद्ध धर्म:** बौद्ध धर्म विश्व के प्रमुख धर्मों में से एक है, जिसकी उत्पत्ति भारत में हुई। भगवान गौतम बुद्ध के जीवन से जुड़े अनेक पवित्र स्थल भारत में स्थित हैं, जो बौद्ध अनुयायियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण तीर्थ माने जाते हैं। बोधगया वह पवित्र स्थान है जहाँ भगवान बुद्ध को बोधि वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। यहाँ स्थित महाबोधि मंदिर यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है और देश–विदेश से लाखों श्रद्धालु यहाँ ध्यान और साधना के लिए आते हैं।

सारनाथ वह स्थल है जहाँ भगवान बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश 'धर्मचक्र प्रवर्तन' दिया था। यह स्थान बौद्ध दर्शन और शिक्षाओं के प्रसार का प्रमुख केंद्र रहा है। कुशीनगर वह पवित्र भूमि है जहाँ भगवान बुद्ध ने महापरिनिर्वाण प्राप्त किया था। इन तीनों तीर्थ स्थलों का धार्मिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व अत्यंत व्यापक है।
बौद्ध तीर्थ स्थलों के कारण अंतरराष्ट्रीय पर्यटन को विशेष प्रोत्साहन मिलता है, जिससे स्थानीय रोजगार, सांस्कृतिक आदान–प्रदान और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है। इस प्रकार बौद्ध धार्मिक पर्यटन भारत के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

3. **सिख धर्म:** सिख धर्म भारत में उत्पन्न एक प्रमुख धर्म है, जिसकी स्थापना गुरु नानक देव जी ने की थी। सिख धर्म के धार्मिक स्थलों को 'गुरुद्वारा' कहा जाता है, जो समानता, सेवा और भाईचारे के प्रतीक हैं। स्वर्ण मंदिर, जिसे हरमंदिर साहिब के नाम से भी जाना जाता है, सिख धर्म का सबसे पवित्र तीर्थ स्थल है। यह पंजाब के अमृतसर नगर में स्थित है और अपनी अद्वितीय वास्तुकला, आध्यात्मिक वातावरण तथा लंगर परंपरा के लिए विश्व–भर में प्रसिद्ध है। प्रतिदिन हजारों श्रद्धालु यहाँ दर्शन के साथ–साथ नि:स्वार्थ सेवा में भाग लेते हैं।

हेमकुंड साहिब उत्तराखंड राज्य में हिमालय की गोद में स्थित एक अत्यंत पवित्र तीर्थ स्थल है। यह स्थल दसवें सिख गुरु, गुरु गोबिंद सिंह जी से जुड़ा हुआ माना जाता है और यहाँ पहुँचने के लिए कठिन पर्वतीय यात्रा करनी पड़ती है। इसके बावजूद हर वर्ष बड़ी संख्या में श्रद्धालु श्रद्धा और आस्था के साथ यहाँ पहुँचते हैं।
स्वर्ण मंदिर और हेमकुंड साहिब जैसे तीर्थ स्थल सिख धर्म की आध्यात्मिक परंपराओं को सुदृढ़ करने के साथ–साथ धार्मिक पर्यटन को भी प्रोत्साहित करते हैं, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था, रोजगार और अवसंरचनात्मक विकास को बढ़ावा मिलता है।

4. **इस्लाम:** इस्लाम धर्म भारत की धार्मिक विविधता का एक महत्वपूर्ण अंग है और इससे जुड़े अनेक पवित्र स्थल देश में स्थित हैं, जो श्रद्धा, सूफी परंपरा और आपसी सौहार्द के प्रतीक माने जाते हैं। अजमेर शरीफ दरगाह राजस्थान के अजमेर नगर में स्थित है और यह महान सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह है। यह दरगाह न केवल मुस्लिम समुदाय बल्कि विभिन्न धर्मों के अनुयायियों के लिए भी आस्था का प्रमुख केंद्र है। यहाँ आयोजित होने वाला उर्स देश–विदेश से लाखों श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है।

निजामुद्दीन दरगाह दिल्ली में स्थित है और यह प्रसिद्ध सूफी संत हज़रत निजामुद्दीन औलिया से संबंधित है। यह दरगाह अपनी आध्यात्मिक शांति, कव्वाली परंपरा और मानवता के संदेश के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ आने वाले श्रद्धालु प्रेम, भाईचारे और समानता के मूल्यों को अनुभव करते हैं।
अजमेर शरीफ और निजामुद्दीन दरगाह जैसे धार्मिक स्थल धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने के साथ–साथ सामाजिक सद्भाव, सांस्कृतिक एकता और आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

5. **ईसाई धर्म:** ईसाई धर्म भारत में एक महत्वपूर्ण धार्मिक परंपरा के रूप में विद्यमान है और इससे जुड़े अनेक पवित्र स्थल देश के विभिन्न भागों में स्थित हैं। गोवा के चर्च ईसाई धार्मिक पर्यटन के प्रमुख केंद्र माने जाते हैं। बेसिलिका ऑफ बॉम जीसस तथा से कैथेड्रल जैसे ऐतिहासिक चर्च अपनी अद्भुत वास्तुकला, ऐतिहासिक महत्व और धार्मिक आस्था के लिए प्रसिद्ध हैं। ये चर्च न केवल ईसाई समुदाय के लिए श्रद्धा के केंद्र हैं, बल्कि यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान रखते हैं।

वेलंकन्नी तमिलनाडु राज्य में स्थित एक प्रमुख ईसाई तीर्थ स्थल है, जिसे "पूर्व का लूर्द" भी कहा जाता है। यहाँ स्थित बेसिलिका ऑफ आवर लेडी ऑफ गुड हेल्थ में प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु आस्था और विश्वास के साथ आते हैं। विशेष पर्वों के अवसर पर यहाँ विशाल धार्मिक आयोजन होते हैं, जिनमें विभिन्न धर्मों के लोग भाग लेते हैं।
गोवा चर्च और वेलंकन्नी जैसे तीर्थ स्थल ईसाई धार्मिक पर्यटन को प्रोत्साहित करने के साथ–साथ सांस्कृतिक समन्वय, राष्ट्रीय एकता और स्थानीय एवं राष्ट्रीय आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं।

धार्मिक पर्यटन का आर्थिक योगदान

धार्मिक पर्यटन भारतीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। तीर्थ स्थलों पर आने वाले लाखों श्रद्धालुओं के कारण होटल, धर्मशाला, परिवहन सेवाएँ, भोजनालय, यात्रा एजेंसियाँ तथा हस्तशिल्प एवं स्थानीय उत्पादों के व्यापार को निरंतर प्रोत्साहन मिलता है। इससे छोटे एवं मध्यम स्तर के व्यवसायों का विकास होता है और स्थानीय बाजारों में आर्थिक गतिविधियाँ बढ़ती हैं।
धार्मिक पर्यटन स्थानीय लोगों के लिए प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार के अनेक अवसर सृजित करता है। होटल कर्मचारी, गाइड, वाहन चालक, दुकानदार, पुजारी, फूल एवं प्रसाद विक्रेता जैसे अनेक वर्ग इससे लाभान्वित होते हैं। साथ ही, इससे महिलाओं और युवाओं को भी स्वरोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं।

सरकार को धार्मिक पर्यटन से कर, प्रवेश शुल्क, परिवहन तथा अन्य सेवाओं के माध्यम से राजस्व की प्राप्ति होती है। इस राजस्व का उपयोग बुनियादी सुविधाओं, अवसंरचना विकास और सामाजिक कल्याण योजनाओं में किया जाता है। इसके अतिरिक्त, धार्मिक पर्यटन ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों के विकास में भी सहायक सिद्ध होता है, क्योंकि अधिकांश तीर्थ स्थल ऐसे ही क्षेत्रों में स्थित होते हैं। इस प्रकार धार्मिक पर्यटन संतुलित क्षेत्रीय विकास और आर्थिक सशक्तिकरण का एक प्रभावी साधन बनता है।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक योगदान

धार्मिक पर्यटन का प्रभाव केवल आर्थिक क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज और संस्कृति के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत जैसे बहुधार्मिक एवं बहुसांस्कृतिक देश में धार्मिक पर्यटन राष्ट्रीय एकता और अखंडता को सुदृढ़ करने का एक प्रभावी माध्यम है। जब देश के विभिन्न भागों से लोग तीर्थ यात्राओं के लिए एक–दूसरे के क्षेत्रों में जाते हैं, तो आपसी संपर्क बढ़ता है और राष्ट्रीय भावना को मजबूती मिलती है।

धार्मिक पर्यटन के माध्यम से भारत की प्राचीन सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत का संरक्षण होता है। मंदिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों, चर्चों एवं मठों का संरक्षण और जीर्णोद्धार किया जाता है, जिससे ऐतिहासिक धरोहर सुरक्षित रहती है। साथ ही, यह पर्यटन विभिन्न धर्मों के बीच आपसी समझ, सहिष्णुता और सौहार्द को बढ़ावा देता है। अनेक धार्मिक स्थल ऐसे हैं जहाँ सभी धर्मों के लोग श्रद्धा और सम्मान के साथ एकत्रित होते हैं।

इसके अतिरिक्त, धार्मिक पर्यटन से पारंपरिक पर्वों, उत्सवों, लोककलाओं, रीति–रिवाजों और धार्मिक अनुष्ठानों का प्रचार–प्रसार होता है। इससे नई पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ती है और भारतीय संस्कृति की विविधता वैश्विक स्तर पर पहचान प्राप्त करती है। इस प्रकार धार्मिक पर्यटन सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक निरंतरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।–

अवसंरचनात्मक विकास में भूमिका

धार्मिक पर्यटन के कारण सड़क, रेलवे, हवाई अड्डे, स्वच्छता, पेयजल, स्वास्थ्य सेवाओं और डिजिटल सुविधाओं का विकास होता है, जिससे स्थानीय जीवन स्तर में सुधार होता है।

धार्मिक पर्यटन अवसंरचनात्मक विकास को प्रोत्साहित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। तीर्थ स्थलों पर श्रद्धालुओं की बढ़ती संख्या को ध्यान में रखते हुए सरकार एवं निजी क्षेत्र द्वारा सड़क नेटवर्क, रेलवे लाइनों तथा हवाई अड्डों के विकास और विस्तार पर विशेष ध्यान दिया जाता है। बेहतर परिवहन सुविधाओं के कारण न केवल तीर्थ यात्रियों को लाभ होता है, बल्कि स्थानीय निवासियों की आवागमन सुविधा में भी सुधार होता है।

धार्मिक पर्यटन के प्रभाव से स्वच्छता, पेयजल आपूर्ति, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन तथा स्वास्थ्य सेवाओं का विकास भी होता है। तीर्थ स्थलों के आसपास अस्पताल, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, शौचालय और स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था की जाती है, जिससे स्थानीय जनता के जीवन स्तर में सकारात्मक परिवर्तन आता है। इसके अतिरिक्त, डिजिटल सुविधाओं जैसे ऑनलाइन बुकिंग, सूचना केंद्र, डिजिटल भुगतान और संचार सेवाओं का विस्तार भी धार्मिक पर्यटन के कारण संभव हो पाता है।

इस प्रकार धार्मिक पर्यटन न केवल धार्मिक स्थलों के विकास तक सीमित रहता है, बल्कि समग्र अवसंरचनात्मक विकास को बढ़ावा देकर स्थानीय क्षेत्रों के सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

- 2022 में धार्मिक पर्यटन ने लगभग 1,439 मिलियन पर्यटकों को आकर्षित किया और ₹1.34 ट्रिलियन तक राजस्व उत्पन्न किया, जो भारत की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दिखाता है।
- 2022 में घरेलू तीर्थस्थलों पर लगभग 1,433 मिलियन घरेलू और 6.64 मिलियन विदेशी पर्यटक आए, जिससे धार्मिक पर्यटन का महत्व स्पष्ट होता है।
- 2023 के आंकड़ों के अनुसार भारत में पवित्र स्थलों से प्राप्त राजस्व पहले वर्षों की तुलना में बढ़ा है, और धार्मिक पर्यटन कुल पर्यटन में 60: से अधिक भागीदारी रखता है।
- 2024–25 के बजट में पर्यटन क्षेत्र के लिए लगभग ₹2,479 करोड़ आवंटित किए गए, जिसमें Swadesh Darshan और PRASHAD जैसी योजनाएँ शामिल हैं, जो तीर्थस्थलों और धार्मिक पर्यटन अवसंरचना के विकास को प्रोत्साहित करती हैं।
- 2025 तक केंद्र सरकार द्वारा PRASHAD और Swadesh Darshan जैसी योजनाओं के तहत कई धार्मिक और सांस्कृतिक स्थलों के विकास के लिए परियोजनाएँ स्वीकृत की गई हैं, जिससे तीर्थ यात्रा–आधारित आर्थिक गतिविधियों को सक्रिय समर्थन मिलता है।

निष्कर्ष

धार्मिक पर्यटन भारत के समग्र विकास में एक महत्वपूर्ण साधन है। यह न केवल आर्थिक समृद्धि लाता है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और अवसंरचनात्मक विकास को भी सुदृढ़ करता है। यदि धार्मिक पर्यटन को सुनियोजित एवं सतत विकास के दृष्टिकोण से बढ़ावा दिया जाए, तो यह भारत को वैश्विक पर्यटन मानचित्र पर और अधिक सशक्त बना सकता है। धार्मिक पर्यटन भारत के समग्र विकास में एक अत्यंत महत्वपूर्ण साधन के रूप में उभरकर सामने आया है। यह न केवल देश की आर्थिक समृद्धि में योगदान देता है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और अवसंरचनात्मक विकास को भी सुदृढ़ करता है। धार्मिक पर्यटन के माध्यम से रोजगार के अवसर सृजित होते हैं, स्थानीय अर्थव्यवस्था को गति मिलती है और राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है। साथ ही, यह भारत की सांस्कृतिक विरासत और धार्मिक परंपराओं के संरक्षण एवं प्रचार–प्रसार में भी सहायक सिद्ध होता है।

इसके अतिरिक्त, धार्मिक पर्यटन सामाजिक समरसता, राष्ट्रीय एकता और विभिन्न धर्मों के बीच आपसी सौहार्द को बढ़ावा देता है। अवसंरचनात्मक विकास के अंतर्गत परिवहन, स्वास्थ्य, स्वच्छता और डिजिटल सुविधाओं के विस्तार से स्थानीय लोगों के जीवन स्तर में सुधार होता है। यदि धार्मिक पर्यटन को सुनियोजित, समावेशी एवं सतत विकास के दृष्टिकोण से प्रोत्साहित किया जाए, तो यह न केवल भारत के आंतरिक विकास को सशक्त बनाएगा, बल्कि वैश्विक पर्यटन मानचित्र पर भारत की स्थिति को भी और अधिक मजबूत एवं प्रतिष्ठित करेगा।

संदर्भ

1. शर्मा, आर. के. (2008) भारत में पर्यटन विकास। नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन।
2. गुप्ता, एस. पी. (2010) पर्यटन प्रबंधन एवं भारत में पर्यटन। जयपुर: आर. बी. एस. ए. पब्लिकेशन।
3. सिंह, वी. के. (2012) धार्मिक पर्यटन और भारतीय संस्कृति। वाराणसी: चौखंभा प्रकाशन।
4. भारत सरकार (2014) भारत पर्यटन सांख्यिकी। पर्यटन मंत्रालय, नई दिल्ली।
5. मिश्रा, पी. एन. (2016) भारत में धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन। इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।

6. UNESCO (2017) World Heritage and Cultural Tourism Report।
7. पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार (2019) Annual Report on Tourism Development in India।
8. दास, एस. (2020) Religious Tourism and Economic Development in India। जर्नल ऑफ टूरिज़्म स्टडीज़।
9. विश्व पर्यटन संगठन – UNWTO (2021) Tourism and Sustainable Development Report।
10. भारत सरकार (2023) Swadesh Darshan & PRASHAD Scheme Report। पर्यटन मंत्रालय।
11. Business Standard. (2024). Religious tourism and its impact on India's economy. Business Standard Publications.
12. Government of India, Ministry of Tourism. (2022). PRASAD scheme: Progress and development of pilgrimage destinations. Ministry of Tourism.
13. Government of India, Ministry of Tourism. (2023). India tourism statistics 2023. Ministry of Tourism.
14. India Brand Equity Foundation (IBEF). (2023). Spiritual and religious tourism in India. IBEF.
15. United Nations World Tourism Organization (UNWTO). (2023). Tourism and cultural heritage development- UNWTO Publications.
16. World Travel & Tourism Council (WTTC). (2024). Economic impact of travel and tourism: India. WTTC.